कृषि एवं कृषि आधारित क्षेत्रों में महिलाओं का योगदान | कृषि कुंभ (अक्टूबर, 2022), खण्ड 02 भाग 05, पृष्ठ संख्या 05–07

कृषि एवं कृषि आधारित क्षेत्रों में महिलाओं का योगदान

डॉ० नीलम कुमारी[1], डॉ गीतांली चौधरी[2], पल्लवी कुमारी[3] एवं नेहा कुमारी[4]

[1, 2] सहायक प्राध्यापिका, सामूदायिक विज्ञान महाविद्यालय, डॉ० रा०प्र०के०कृ०वि०, पूसा
[3]परियोजना सलाहकार (यूनाइटेड नेंसन इंटरनेषनल चिल्ड्रेंस फंड) खाद्य एवं प्रसंस्करण उत्कृष्टता केन्द्र, डॉ० रा०प्र०के०कृ०वि०, पूसा
[4]अनुसंधान सहायक, हारवेस्ट पल्स परियोजना सलाहकार, खाद्य एवं प्रसंस्करण उत्कृष्टता केन्द्र, डॉ० रा०प्र०के०कृ०वि०, पूसा भारत।

Email: neelamkumaribr01@gmail.com

प्राचीन ग्रंथों में महिलाओं को अन्नपूर्णा की सेवा दी गई है। कृषि विकास में महिलाओं की भागीदारी प्राचीन काल से ही है। भारत कृषि प्रधान देश है जिसकी अर्थव्यवस्था कृषि पशुपालन तथा कृषि उद्योगों पर निर्भर करती है। देश की लगभग 45 प्रतिशत आबादी ग्रामीण क्षेत्रों में रहती है। जिसका 45– 48 प्रतिशत हिस्सा महिलाओं का है। देश के आर्थिक विकास में कार्यरत महिलाओं का 84 प्रतिशत कृषि और इससे जुड़े कार्यों में संलग्न है। इसमें 50 प्रतिशत खेती हर मजदूर हैं। ग्रामीण महिलाओं के अपार योगदान का ही परिणाम है की हमारा देश कृषि तथा दुग्ध उत्पादन के क्षेत्र में आत्म निर्भर बना है। आज भी ग्रामीण क्षेत्रों में रसोई में चूल्हा जलाने के लिये इंधन इकट्ठा करने, जानवरों का चारा एकत्रित करने तथा खेती से जुड़े कई कार्य करने में नारी का अहम योगदान है । इन सभी क्षेत्रों में महिलाओं की सहभागिता पुरुषों से कहीं अधिक है । कृषि आधारित अर्थव्यवस्था में ग्रामीण महिलाओं की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण है। महिलाएं अब घर के दायरे में सीमित न रहकर बाहर के कार्यों में हाथ बटाती है जो देश के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

इतिहास साक्षी है की भारत की महिलायें किसी भी क्षेत्र में पुरुषों से कम नहीं हैं। पिछले कुछ दशक में पशुपालन, मुर्गीपालन, चारा प्रबंधन, वानिकी, मछली पालन, मधुमक्खी पालन, सब्जी उत्पादन, वर्मी कम्पोस्टिंग, मशरुम उत्पादन, बीज उपचार, खाद्य प्रसंस्करण, फूल उत्पादन, चाय, कपास एवं अनाजों को संग्रहित एवं भंडारण करने में भी महिलाओं का महत्वपूर्ण योगदान है। ग्रामीण महिलाएं अब कृषि को उद्योग के रूप में विकसित करने में अपना योगदान साबित करने का प्रयास कर रही है। जिसके तहत कुछ उदाहरणों की चर्चा करना उचित जान पड़ रहा है।

1. **फल या सब्जी की खेती** : इस क्षेत्र में महिलाएं स्वयं सहायता समूह के माध्यम से

उत्पादन का काम कर रही हैं । जो लाभदायक साबित हो रहा है।

2. **गेंदा के फूल की खेती :** गेंदा एक महत्वपूर्ण व्यवसायिक फूल है । यह विभिन्न प्रकार की भूमि और जलवायु में उगाया जा सकता है । इसके फूल लम्बे समय तक खिले रहते है तथा ज्यादा समय तक ताजे रहते हैं। इसी प्रकार रजनीगंधा तथा ग्लेडियोलस फूलों की खेती स्वयं सहायता समूहों द्वारा किया जा रहा है । जो ग्रामीण महिलाओं की आर्थिक स्थिति को मजबूती प्रदान कर रहा है।
3. **कृषक महिलाओं में बेबी कॉर्न** की खेती भी आकर्षण का केंद्र है।
4. **मधुमक्खी पालन :** यह क्षेत्र जो एक कम खर्च किन्तु बेहतर आमदनी का स्रोत है जिसे महिलाएं बखूबी निभा रहीं हैं।
5. **मछली उत्पादन :** यहाँ भी महिलाएं अकेले अथवा स्वयं सहायता समूह के माध्यम से इस काम को अंजाम दे रहीं हैं। साथ ही दूसरी महिलाओं को रोजगार भी मिल रहा है। परिवार की पौष्टिक भोजन की समस्या का भी समाधान स्वतः हो रहा है
6. **पशुपालन :** ग्रामीण महिलाओं का पशुपालन व्यवसाय में महत्वपूर्ण योगदान है। इस क्षेत्र में तीन चौथाई भागीदारी महिलाओं की है।
7. **दूध भी, उत्पाद भी :** डेयरी व्यवसाय महिलाओं के लिये अच्छा व्यवसाय है । महिलाएं इसे कृषि के साथ कर रही हैं। हमारे भोजन में दूध तथा दूध से बने पदार्थों का उपयोग अधिक मात्रा में किया जाता है। बाजार में इनकी मांग अधिक होने के कारण इस व्यवसाय में सफलता की अधिक संभावनाएं हैं।
8. **बात जैविक खाद की :** वर्तमान समय में जैविक खाद्य पदार्थों का अधिक महत्व है। ग्रामीण महिलाएं वर्मी कम्पोस्ट का उत्पादन कर मिट्टी की उर्वरा शक्ति को बढ़ाने का प्रयास कर रही हैं।
9. **मशरुम उत्पादन :** मशरुम उत्पादन के क्षेत्र में भी ग्रामीण महिलाएं सवयं सहायता समूह की महिलाएं तकनीकी जानकारी प्राप्त कर बढ़िया उत्पादन कर रही हैं।
10. **खाद्य प्रसंस्करण का क्षेत्र :** खेतों में बीज बोने से शुरू कर फसल भंडारण तक तो महिलाओं की भूमिका की चर्चा हो चुकी है। जहाँ तक प्रसंस्करण की बात है महिलाएं पारम्परिक विधियों द्वारा खाद्य प्रसंस्करण करती आ रही हैं। अब वे तकनीकी सहयोग से मुल्य्वान्छित उत्पाद तैयार कर बाजार में मांग की पूर्ति कर रही है।

इसके अलावे नर्सरी उत्पादन, मुर्गीपालन, सूअर पालन, बकरी पालन आदि क्षेत्रों में भी महिलाओं की सराहनीय भूमिका है । कृषि क्षेत्र में महिलाओं के योगदान को मजबूती प्रदान करने हेतु विभिन्न परियोजनाओं के माध्यम से भी प्रयास जारी है । वर्तमान परिस्थिति में महिलाओं की कार्यकुशलता, तकनीकी ज्ञान एवं विचार धारा में परिवर्तन लाने की आवश्यकता है । साथ ही वेज्ञानिकों द्वारा विकसित नई तकनीकी जानकारी ग्रामीण महिलाओं तक पहुचाना अति आवश्यक है।